Husno Jamale Mustafa صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 217
Weekly Booklet : 217

रबीउ़ल अव्वल 1442 हि. के मदनी मुज़ाकरों में "जमाले मुस्त़फ़ा" के मौज़ूअ़ पर होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के बयानात मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सफ़हात 45

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 02
क़ल्ब व सीनए मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 14
ख़ुश्बूए मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 17
ख़साइसे मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 37
ज़बाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 40

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

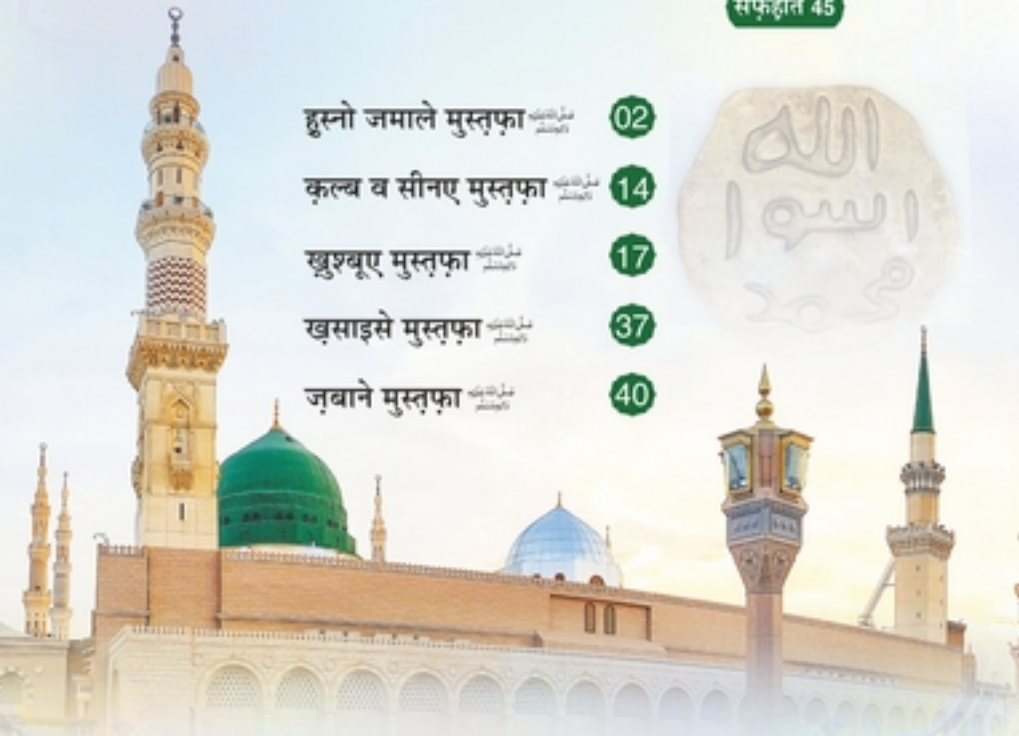

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **हुस्नो जमाले मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल **1443** हि., अक्तूबर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला (**हुस्नो जमाले मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9898732611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج٥١ ص١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 43 सफ़ह़ात का रिसाला : **''हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' पढ़ या सुन ले उसे मरते वक़्त अपने प्यारे प्यारे ह़सीनो जमील आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा दिखा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत की अस्ल नूरे मुह़म्मदी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है लिहाज़ा जन्नत उस नूर की त़रफ़ इस त़रह़ शौक़ रखती है जिस त़रह़ बच्चा अपने बाप की त़रफ़ शौक़ रखता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर जब जन्नत सुनती है तो ख़ुश हो कर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ लपकती है क्यूं कि वोह आप ही से सैराब होती है, वोह फ़िरिश्ते जो जन्नत के अत़राफ़ (Sides) और दरवाज़ों पर मुक़र्रर हैं। वोह हर वक़्त नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ पढ़ने में मश्ग़ूल रहते हैं, इस से जन्नत उन की मुश्ताक़ (या'नी आरज़ू मन्द) हो कर उन की त़रफ़ जाती है चूंकि फ़िरिश्ते जन्नत के अत़राफ़ में हैं इस लिये जन्नत चारों सम्त फैल जाती है अगर **अल्लाह** पाक का इरादा न होता और उस ने जन्नत को रोके न रखा होता तो जन्नत हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ाहिरी

ज़िन्दगी में निकल कर आ जाती और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां तशरीफ़ ले जाते जन्नत भी वहां जाती मगर **अल्लाह** पाक ने जन्नत को रोक दिया ताकि इस पर ईमान बिलग़ैब ह़ासिल हो। (الابریز، 337/2)

आ'ला ह़ज़रत, आ़शिक़े माहे रिसालत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क्या ख़ूब लिखते हैं :

जन्नत है उन के जल्वे से ज़ूयाए रंगो बू ऐ गुल हमारे गुल से है गुल को सुवाले गुल

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप इतने ख़ूब सूरत (Beautiful) हैं, इतने ख़ूब सूरत हैं, इतने ख़ूब सूरत हैं कि जन्नत भी आप से ख़ूब सूरती और ख़ुश्बू की त़लब गार है, ऐ बाग़ में खिलने वाले फूल ! तू भी गुलशने रिसालत के महक्ते फूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ूब सूरती की भीक मांग ले।

देख रिज़्वां दश्ते त़यबा की बहार मेरी जन्नत का न पाएगा जवाब
सर से पा तक हर अदा है ला जवाब ख़ूबरूयों में नहीं तेरा जवाब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक ने अपने प्यारे प्यारे, आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह हुस्नो जमाल अ़त़ा फ़रमाया है कि जिस की मिसाल नहीं मिलती, और मिसाल मिले भी कैसे ? क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने आप जैसा ह़सीनो जमील (Most Beautiful) कोई और बनाया ही नहीं, हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसा था कि कोई कहता है चेह्‌रए मुबारक चांद जैसा है तो कोई कहता है कि रुख़े रोशन से नूर की किरनें निकलती थीं

तो कोई कहता है आप से बढ़ कर "ख़ूब सूरत" दुन्या में आया ही नहीं। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे रिसालत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने चार ज़बानों में लिखे हुए बे मिसाल कलाम में फ़रमाते हैं :

لَمْ يَاتِ نَظِيْرُكَ فِيْ نَظَرٍ *मिस्ले तो न शुद पैदा जाना*

जग राज को ताज तोरे सर सो है तुझ को शहे दो सरा जाना

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप जैसा ह़सीनो जमील (Most Beautiful) किसी आंख ने देखा ही नहीं है क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा कोई ख़ूब सूरत पैदा हुवा ही नहीं, सारी काएनात की बादशाहत का ताज आप ही के मुबारक सर पर है और मैं आप को दोनों जहानों का "शहन्शाह" (Emperor) मानता हूं।

अल्लाह अल्लाह शहे कौनैन जलालत तेरी फ़र्श क्या अ़र्श पे जारी है हुकूमत तेरी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शाइ़री ऐन क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ है चुनान्चे सिह़ाह़ सित्ता (या'नी अह़ादीसे मुबारका की 6 अहम किताबों) में से मश्हूर किताब "तिरमिज़ी शरीफ़" में है : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे दो वज़ीर (Vizier) जिब्रईल व मीकाईल (عَلَيْهِمَا السَّلَام) आस्मान में हैं और मेरे दो वज़ीर अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) ज़मीन में हैं। (ترمذی، 5/382، حدیث:3700)

इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीनो आस्मान की सल्त़नत के "अ़ज़ीमुश्शान बादशाह" हैं क्यूं कि वज़ीर बादशाह ही के हुवा करते हैं और आप की बादशाहत भी कैसी अ़ज़मतो शान वाली है कि ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं :

बुख़ारी शरीफ़ हदीस नम्बर 1344 : ''اُعْطِيْتُ مَفَاتِيْحَ خَزَائِنِ الْاَرْضِ'' या'नी मुझे ज़मीनी ख़ज़ानों (Worldly Treasures) की चाबियां अ़ता फ़रमा दी गईं। (بخاری، 1/452، حدیث:1344) फिर हम क्यूं न झूम झूम कर पढ़ें :

उन्हें ख़ुदा ने किया अपने मुल्क का मालिक उन्हीं के क़ब्ज़े में रब के ख़ज़ाने आए हैं
येह किस शहनशहे वाला की आमद आमद है येह कौन से शहे बाला की आमद आमद है

मक्की मरहबा ! मदनी मरहबा !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

हुस्ने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सहाबिये रसूल, सैफ़ुम्मिन सुयूफ़िल्लाह या'नी **अल्लाह** की तलवारों में से एक तलवार ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से एक क़बीले के सरदार ने पूछा : अपने नबी का हुस्नो जमाल बयान कीजिये। फ़रमाया : मैं तफ़्सील से बयान नहीं कर सकता। उस ने अ़र्ज़ किया : मुख़्तसर सा बयान कर दीजिये। फ़रमाया : जैसा भेजने वाला ख़ुदा है इसी ए'तिबार से उस का रसूल भी बा कमाल है। (المواہب اللدنیہ، 2/5 مفہوما)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कूज़े में समुन्दर बन्द कर दिया। या'नी जिसे भेजने वाला ख़ुदा है और फिर वोह ख़ुदा का महबूब भी है तो फिर उस के ह़स्नो जमाल का अन्दाज़ा ख़ुद ही लगा लें।

जिस के हाथों के बनाए हुए हैं हुस्नो जमाल ऐ ह़सीं तेरी अदा उस को पसन्द आई है
बाग़े जन्नत में निराली चमन आराई है क्या मदीने पे फ़िदा हो के बहार आई है

मश्हूर सना ख़्वाने रसूल, सहाबिये रसूले मक़्बूल, ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه हुस्नो जमाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं बयान फ़रमाते हैं :

وَاَحْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِيْ وَاَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَاءُ
خُلِقْتَ مُبَرَّاً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ كَاَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَاءُ

तरजमा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी आंखों ने आप से ज़ियादा ह़सीनो जमील (Most Beautiful) शख़्स देखा ही नहीं । **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप जैसा ख़ूब सूरत आज तक किसी औ़रत ने पैदा ही नहीं किया । **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक ने आप को हर ऐ़ब (Defect) से पाक पैदा फ़रमाया । **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जैसा आप चाहते थे वैसा ही आप को पैदा किया गया ।" (روح المعانی، پ11، تحت الآیۃ:2، 11/83)

जिस के हाथों के बनाए हुए हैं हुस्नो जमाल
ऐ ह़सीं तेरी अदा उस को पसन्द आई है

किसी और महब्बत वाले ने भी क्या ख़ूब लिखा है :

सह़ाबा वोह सह़ाबा जिन की हर सुब्ह़ ईद होती थी
ख़ुदा का क़ुर्ब ह़ासिल था नबी की दीद होती थी

हर सह़ाबिये नबी..... जन्नती जन्नती
सब सह़ाबियात भी..... जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी..... जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी..... जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी ..... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली..... जन्नती जन्नती
हैं ह़सन हुसैन भी..... जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी..... जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी..... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी..... जन्नती जन्नती

ऐ आ़शिक़ाने हुस्नो जमाले मुस्तफ़ा ! एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : हमारे लिये साह़िबे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल, मह़बूबे रब्बे जुल

जलाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सारा हुस्नो जमाल ज़ाहिर ही नहीं हुवा अगर सब ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आंखें आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख ही न सकतीं। (مواہب لدنیہ 2/5)

साहिबे हुस्नो जमाल, नूर वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! मेरी ह़क़ीक़त मेरे रब के इलावा और कोई नहीं जानता। (مطالع المسرات، ص133)

येही मन्ज़ूर था कुदरत को कि साया न बने ऐसे यक्ता के लिये ऐसी ही यक्ताई हो
इक झलक देखने की ताब नहीं आ़लम को वोह अगर जल्वा करें कौन तमाशाई हो

(ज़ौक़े ना'त, स. 104, 105)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन अल्फ़ाज़ में क्या ख़ूब बयान किया है :

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब

शर्ह़े कलामे रज़ा : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को पर्दे में छुपा कर औ़रतों के हाथों में लीमूं या सेब काटने के लिये दिये गए थे फिर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का जल्वा दिखा कर लीमूं काटने का हुक्म दिया गया लेकिन जैसे ही उन्हों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का जल्वा देखा तो सब की सब हक्की बक्की रह गईं और लीमूं काटने के बजाए अपनी उंग्लियां काट बैठीं और उन्हें पता भी न चला। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का हुस्नो जमाल देख कर उंग्लियां कटीं और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल देख कर नहीं बल्कि सिर्फ़ नामे मुबारक पर उंग्लियां नहीं अ़रब के बड़े बड़े जवान अपने सर कटाते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(3 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आ़म त़ौर पर इन्सान के चेहरे से उस के ख़ूब सूरत होने या न होने का अनदाज़ा लगाया जाता है, इस दुन्या में बड़े ''ह़सीन'' पैदा हुए, किसी का हुस्न उस के ख़ानदान में मश्हूर हुवा तो किसी का उस के अ़लाक़े, शह्र या गाउं वग़ैरा तक और अगर कोई बहुत ज़ियादा ख़ूब सूरत हुवा तो मुल्क भर में उस की ख़ूब सूरती के चरचे हुए, लेकिन इस काएनात में सब ह़सीनों से बढ़ कर एक ख़ूब सूरत, ह़सीनो जमील तशरीफ़ लाने वाला ऐसा भी है जिस की ख़ूब सूरती उन के ख़ानदान व अ़लाक़े तक ही महदूद न रही बल्कि सारी काएनात उस के हुस्नो जमाल की मो'तरिफ़ (या'नी मानने वाली) है। न सिर्फ़ उन की ज़ाहिरी ह़यात में बल्कि सेंकड़ों साल गुज़र जाने के बा'द आज भी उन के हुस्नो जमाल के चरचे (या'नी शोहरत) की अ़रबो अ़जम में धूमधाम है। अपने तो अपने दुश्मन भी उन की सीरत व सूरत में आज तक कोई नक़्स (Fault) बयान नहीं कर सके। बयान करते भी कैसे ? क्यूं कि ख़ालिक़े काएनात ने उन्हें हुस्न ही ऐसा अ़त़ा फ़रमाया है कि जो उन को देखता है वोह उन पर क़ुरबान होने को तय्यार हो जाता है। सरे मुबारक से पाउं मुबारक के नाख़ुनों तक ऐसे ह़सीनो जमील कि हुस्न भी इस पर नाज़ करे और वोह साह़िबे हुस्नो जमाल मह़बूबे रब्बे जुल जलाल, **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, **अल्लाह** करीम के प्यारे नबी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام सारी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत थे मगर **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन से भी कई गुना बढ़ कर ह़सीनो जमील थे क्यूं कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ''हुस्न''

का एक जुज़ (या'नी हिस्सा) मिला, जब कि रसूले बे मिसाल बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "हुस्ने कुल" (या'नी मुकम्मल ख़ूब सूरती) अ़ता हुई। सूरज, चांद, सितारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर से ख़ैरात ले कर आस्माने दुन्या पर चमक्ते हैं।

يَا صَاحِبَ الْجَمَالْ وَيَا سَيِّدَ الْبَشَرْ مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرْ لَقَدْ نُوِّرَ الْقَمَرْ
لَا يُمْكِنُ الثَّنَآءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ بعد از خدا بزرگ توئی قصہ مختصر

या'नी ऐ हुस्नो जमाल वाले ! ऐ तमाम लोगों के सरदार ! ऐ वोह जिन के मुबारक रोशन चेहरे से चांद रोशनी हासिल कर के चमक रहा है। येह मुम्किन ही नहीं है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऐसी शान बयान की जा सके जैसा उस का हक़ है, **अल्लाह** पाक के बा'द आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही सब से बुज़ुर्ग (या'नी अ़ज़मत वाले) हैं। सारी मख़्लूक़ में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बड़े हैं।

येह रुबाई (या'नी चार मिस्रए) आज कल के किसी शाइर के नहीं बल्कि इस के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : किसी ने इस रुबाई की निस्बत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़रफ़ की है तो किसी ने शैख़ सा'दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़रफ़ की है और ज़ियादा तर उ़लमा का ख़याल है कि येह रुबाई (या'नी चार मिस्रए) अ़ल्लामा जामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हैं।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत के वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा सफ़ह़ा 115 पर फ़रमाते हैं : इन्सानों की अ़क़्लों की क्या बिसात़ (या'नी त़ाक़त) जो नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताब ला सकें। (या'नी इस को बरदाश्त कर सकें।) कुछ आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया है कि जन्नती ह़ूर का कंगन (Bangle) ज़ाहिर हो तो सूरज की रोशनी मिटा

दे, जैसे सूरज सितारों की रोशनी मिटा देता है । पस सूरते मुह़म्मदी (عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) जन्नती ह़ूर से ह़ज़ार दरजे रोशन तर है उस के देखने की कौन ताब ला सके । (अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 114)

क्या मुंह है आईने का तेरी ताब ला सके ख़ुरशीद पहले आंख तो तुझ से मिला सके

या'नी आईना क्या ह़ैसिय्यत रखता है कि आप के चेहरे की चमक दमक बरदाश्त कर सके। ख़ुरशीद (या'नी सूरज) पहले आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आंख मिलाने के क़ाबिल हो जाए । फिर आईने की बात करेंगे । ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

इक झलक देखने की ताब नहीं आ़लम को वोह अगर जल्वा करें कौन तमाशाई हो

(ज़ौक़े ना'त, स. 204)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्नो जमाल पर पर्दे हैं, अगर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़क़ीक़ी हुस्नो जमाल ज़ाहिर हो जाए तो दुन्या वाले उस की एक झलक भी बरदाश्त न कर सकेंगे । बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ूब सूरती में तमाम लोगों में सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत और अख़्लाक़ में सब लोगों से बढ़ कर अच्छे अख़्लाक़ वाले थे । (بخاری، 2/487، حدیث:3549)

ह़ज़रते बीबी उम्मे मा'बद رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूर से निहायत ख़ूब सूरत और क़रीब से निहायत शीरीं (या'नी मीठे मीठे) और ह़सीन लगते थे । (دلائل النبوۃ للبیہقی، 1/279) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ह़सीनो जमील किसी को नहीं देखा । (شمائل ترمذی، ص86، حدیث:116)

ख़ामए क़ुदरत का ह़स्ने दस्त कारी वाह वाह क्या ही तस्वीर अपने प्यारे की संवारी वाह वाह

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक की क़ुदरत के क़लम की शानो शौकत के भी क्या कहने ! कि उस ने कितने ही दिलकशो दिलरुबा अन्दाज़ में अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे मिसाल व ला जवाब सूरते पाक बनाई है।

नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में बड़ी प्यारी बात

हज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नूर वाले आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूरे मुबारक मार्च के महीने में तीन मरतबा तमाम बीजों पर अपनी ख़ुश्बू डालता है जिस की बरकत से उन बीजों में फल पैदा होते हैं अगर आपे صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूरे मुबारक न होता तो येह फल भी पैदा न होते, दूसरों का तो ज़िक्र ही क्या ? जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ज़मीन पर तशरीफ़ लाए उस वक़्त दरख़्तों के फल निकलने के फ़ौरन बा'द ज़मीन पर गिर जाते थे तो **अल्लाह** पाक ने उन फलों को बाक़ी रखने के इरादे के तहूत उन्हें नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सैराब (Satiate) किया जिस के बाइ़स दरख़्तों के फल पकने के बा'द भी दरख़्तों के साथ लगे रहते हैं। (الابریز،2/186،193)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! पता चला कि जो हम मीठे मीठे फल खाते हैं उन में भी नूरे मुहम्मदी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किरनें मौजूद हैं। उन में भी नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकतें होती हैं।

क्या नूरे अहमदी का चमन में ज़ुहूर है हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नूर है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

चेहरए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(4 रबीउ़ल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने मीलादे मुस्तफ़ा ! इन्सान के जिस्म में सब से

ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ उ़ज़्व "चेहरा" (Face) है क्यूं कि बन्दा जब किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है तो चेहरे ही की त़रफ़ नज़र जाती है। सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हमदान की एक ख़ातून ने मुझे बताया कि मैं ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज किया है, मैं ने कहा : हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक चेहरा कैसा था ? तो उस ने कहा : चौदहवीं रात के चांद की त़रह़, ऐसा चेहरा न मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले कभी देखा और न आप के बा'द। (مدارج النبوۃ، 5/2)

सह़ाबिये रसूल, मौला अ़ली मुश्किल कुशा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक में कुछ गोलाई थी। (या'नी मुकम्मल त़ौर पर मुबारक चेहरा गोल न था और येह बात अहले अ़रब में बहुत पसन्दीदा है।) (مواہب لدنیہ، 8/2)

"अश्शिफ़ाअ बि ता'रिफ़ि हुक़ूक़िल मुस्त़फ़ा" में है : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक सफ़ेद, सुर्ख़ डोरे वाली काली और कुशादा मुबारक आंखें, लम्बी पलकें (Long Blessed Eyelashes), रोशन चेहरा, बारीक अब्रू (Thin Blessed Eyebrows), गोल चेहरा (Holy Face) और कुशादा पेशानी मुबारक (Wide Blessed Forehead) थी। (الشفاء، ص59)

एक रिवायत में है : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमक्ता दमक्ता था।

(जवाहिरुल बिह़ार (मुतर्जम), 3/252)

रूए बदरुद्दुजा देखते रह गए   चेहरए वद्दुहा देखते रह गए

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमारे नूर वाले आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कई बुज़ुर्गों ने "बद्र" या'नी "चौदहवीं रात के चांद" से तश्बीह दी है क्यूं कि चौदहवीं चांद को मुकम्मल तौ़र पर देखा जा सकता है। चौदहवीं के चांद को बद्र और पहली तारीख़ से तीसरी तारीख़ तक हिलाल कहते हैं और इसी से रूयते हिलाल का लफ़्ज़ निकला है। येह सब से बारीक होता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक मुबारक नाम "बद्र" भी है। जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के से मदीने की त़रफ़ हिजरत फ़रमा रहे थे तो "सनिय्यातुल वदाअ़" के मक़ाम पर बच्चियों ने इसी मुबारक नाम से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल भी किया था। और वोह येह कलाम पढ़ रही थीं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

तरजमा : हम पर बद्र (या'नी चौदहवीं का चांद) सनिय्यातुल वदाअ़ की पहाड़ियों से तुलूअ़ (या'नी ज़ाहिर) हो गया है, हम पर शुक्र अदा करना लाज़िम है जब तक दुआ़ करने वाले दुआ़ करते रहें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक पारह 30 **सूरतुद्दुहा** में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾

(پ30، الضحیٰ:1-2)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : चाश्त की क़सम और रात की जब पर्दा डाले।

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, जिल्द 4 सफ़ह़ा 411 पर फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक "ضُحٰى" से मुराद प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीलादे पाक का दिन है, जब कि "لَيْل" या'नी रात से मुराद शबे

मे'राज है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : "ضُحٰی" से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रुख़े अन्वर (या'नी चेह्रए मुस्त़फ़ा) है "لَيْل" से मुराद आप के बाल मुबारक (Holy Hair) हैं जो कि सियाही में रात की त़रह़ हैं। (تفسیر عزیزی، 4/411) बारगाहे रिसालत में हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

दिखा दीजे शहा पुरनूर चेहरा सिफ़त में जिस की वश्शम्स और दुह़ा है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सूरज और चांद से तश्बीह देना अ़रब के रस्मो रवाज के मुत़ाबिक़ है वरना सच्ची बात येह है कि कोई भी चीज़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत व सीरत की मिसाल बन ही नहीं सकती। किसी शाइ़र ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

चांद की त़रह़ उन को हम कहें तो मुजरिम हैं क्यूं कि उन की चौखट पर चांद ख़ुद सुवाली है
हर त़रफ़ मदीने में भीड़ है फ़क़ीरों की एक देने वाला है कुल जहां सुवाली है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब ख़ुश होते तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक चेहरा (Holy Face) आईने (Mirror) की त़रह़ हो जाता जिस में दरो दीवार और लोगों के चेहरों का अ़क्स (Shadow) झलक्ने लगता। (مدارج النبوة، 1/6) या'नी जो चीज़ें वहां मौजूद होतीं वोह सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे से नज़र आने लगतीं या'नी झलक्ने लगतीं।

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी ह़िजाब में है
ज़माना तारीक हो रहा है कि मह्र कब से निक़ाब में है

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ नूर वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने चेह्रए पुरनूर से पर्दा हटा कर शरबते दीदार पिला दीजिये, जब से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक चेहरा पर्दे में है ज़माने में अंधेरा सा छा गया है। काश ! काश ! सद करोड़ काश !

सकरात की जब सख़्तियां सरकार हों त़ारी लिल्लाह ! मुझे अपने नज़ारों में गुमाना
जब दम हो लबों पर ऐ शहन्शाहे मदीना तुम जल्वा दिखाना मुझे कलिमा भी पढ़ाना
आक़ा मेरा जिस वक़्त कि दम टूट रहा हो उस वक़्त मुझे चेहरए पुरनूर दिखाना

(वसाइले बख़्शिश, स. 352)

क़ल्ब व सीनए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(5 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! तू ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लील (या'नी दोस्त) होने, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अपने साथ कलाम (या'नी बात) करने का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया है, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये पहाड़ों और लोहे को और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये जिन्नात, इन्सान और तमाम ह़ैवानात को फ़रमां बरदार कर दिया है, तो मुझे कौन सी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी से ख़ास फ़रमाया है ? इस पर सूरए "اَلَمْ نَشْرَحْ" नाज़िल हुई जिस में इर्शाद हुवा :

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَ وَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْۤ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾

(پ30، الم نشرح: 1 تا 4)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।

गोया इर्शाद फ़रमाया गया : ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर हम ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लील बनाया है तो आप की ख़ात़िर हम ने आप का सीना इ़ल्मो ह़िक्मत और मा'रिफ़त (या'नी अपनी पहचान) के

नूर से खोल दिया है अगर हम ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अपने साथ हम कलाम होने का शरफ़ अ़ता किया तो आप को ला मकां (मे'राज की रात अपने पास) बुला कर अपना दीदार अ़ता फ़रमाया है अगर हम ने ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمَا السَّلَام को दुन्या की चन्द चीज़ों पर हुकूमत बख़्शी है तो आप को आस्मानों की हुकूमत अ़ता फ़रमाई है कि वहां के फ़िरिश्ते ख़ादिमों की त़रह़ आप की बारगाह में ह़ाज़िर रहते हैं।

(الکلام الاوضح فی تفسیر الم نشرح، ص14، ملتقطا وملخصا)

रफ़्अ़ ज़िक्रे जलालत पे अर्फ़अ़ दुरूद शर्हे सद्रे सदारत पे लाखों सलाम

दिल समझ से वरा है मगर यूं कहूं गुन्चए राज़े वह़दत पे लाखों सलाम

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के प्यारे प्यारे **अल्लाह** पाक ने कुरआने करीम में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत की बुलन्दी का जो ज़िक्र फ़रमाया है उस पर बड़े दुरूद हों और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीनए बे कीना को जो शक़ किया (या'नी खोला) गया आप के उस अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े पर लाखों सलाम हों। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के सीनए पाक की अ़ज़मतो शान मेरी अ़क़्ल की बुलन्दियों से बुलन्दो बाला है मैं तो सिर्फ़ इतना ही कहता हूं कि येह मुबारक सीना **अल्लाह** पाक के छुपे राज़ों का ख़ज़ीना है इस पर लाखों सलाम हों।

ऐ काश ! सद करोड़ काश ! माहे मीलाद के इन मुबारक दिनों के सदक़े हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान इब्ने इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحِمَهُمَا اللّٰه की मुबारक तमन्ना हमारे ह़क़ में क़बूल हो जाए।

रऊफ़ ऐसे हैं और येह रह़ीम हैं इतने कि गिरते पड़तों को सीने लगाने आए हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ऐ आशिक़ाने मीलादे रसूल ! हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने शक़्क़े सद्रे मुबारक (या'नी मुबारक सीनए बे कीना को चाक करने या'नी खोलने) के बा'द पाकीज़ा दिल को जब आबे ज़मज़म से धोया तो फ़रमाया : इस में दो आंखें हैं जो देखती हैं और दो कान हैं जो सुनते हैं।

(فتح الباری ج14ص407، تحت الحدیث:7517)

ग़ज़ालिये ज़मां अल्लामा सय्यिद अहमद सईद काज़िमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुबारक दिल के येह कान और आंखें दुन्या की वोह चीज़ें जो महसूस की जा सकें उन से बहुत ही आगे की हक़ीक़तों को देखने और सुनने के लिये हैं जैसा कि ख़ुद हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं वोह देखता हूं जो तुम नहीं देख सकते और वोह सुनता हूं जो तुम नहीं सुन सकते। (मक़ालाते काज़िमी, 1/160 ब तग़य्युर)

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान — काने ला 'ले करामत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया — उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 300)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुबारक सीना और पेट शरीफ़

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : हम सब के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक सीना (Holy Chest) कुशादा (या'नी चौड़ा) था। बा'ज़ हिस्से का गोश्त बा'ज़ पर चढ़ा हुवा नहीं था बल्कि शीशे की मानिन्द बराबर और चांद की तरह सफ़ेद था। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक सीने के ऊपर वाले हिस्से से नाफ़ शरीफ़ तक बारीक धार की तरह बालों का एक ख़त मिला हुवा था (या'नी बालों की लकीर सी बनी हुई

थी) और इस के इ़लावा आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा सीने और पेट मुबारक पर कोई बाल नहीं था। (احیاء العلو، 2/470)

ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रिवायत में है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पेट और सीनए मुबारक बराबर थे। न तो पेट शरीफ़ सीनए पाक से और न सीनए पाक पेट शरीफ़ से बुलन्द था। ह़ज़रते बीबी उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक पेट को देखा गोया काग़ज़ हैं एक दूसरे पर रखे हुए और तह किये हुए।

(जवाहिरुल बिह़ार (मुतर्जम), 3/263)

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़ुश्बूए मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(6 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

जा के सबा तू कूए मुह़म्मद ला के सुंघा ख़ुश्बूए मुह़म्मद

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसे हुस्नो जमाल में बे मिसाल थे ऐसे ही आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू भी ला जवाब थी। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे पाक से ऐसी भीनी भीनी ख़ुश्बू आती थी कि पहचानने वाले येह जान लेते थे कि अभी यहां से **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुज़रे हैं।

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्के तर ग़ुबार अदना सी येह शनाख़्त तेरी रह गुज़र की है

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां से तशरीफ़ ले जाएं तो उस जगह से गुज़रने की एक छोटी सी निशानी येह

होती कि वोह ज़मीन और वहां की हवा मुश्को अम्बर (Musk and Amber) और अबीर जैसी बेहतरीन खुश्बूओं से भी ज़ियादा खुश्बूदार हो जाती है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अम्बर बहुत क़ीमती खुश्बू है जो मख़्सूस मछली से हासिल की जाती है। अबीर भी एक मख़्सूस खुश्बूदार पाउडर है जो चन्द खुश्बूओं सन्दल वग़ैरा से मिला कर तय्यार कर के कपड़ों पर छिड़का जाता है, जैसे आज कल बॉडी स्प्रे आते हैं। मुश्क निहायत क़ीमती खुश्बू है जो नर हिरन की नाफ़ से हासिल होता है और येह किसी किसी हिरन में होता है।

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! जिन खुश नसीब सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नबिय्ये मुबारक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से आने वाली खुश्बू को सूंघा है उन के फ़रामीन सुनिये और झूमिये। हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस कूचे व बाज़ार से गुज़रते फिर कोई शख़्स उस तरफ़ से गुज़रता तो वोह वहां की फ़ज़ा से आने वाली खुश्बू से पहचान जाता कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहां से गुज़रे हैं।

(دارمی، 1/45، حدیث:66، الشفاء، 1/63)

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर रह गई सारी ज़मीं अम्बरे सारा हो कर

शर्हे कलामे रज़ा : सय्यिदे वाला या'नी हमारे प्यारे प्यारे बुलन्दो बाला, अज़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां से गुज़रे हैं, वोह सारी ज़मीन अम्बरे सारा या'नी बेहतरीन खुश्बू बन जाती है, अम्बर की खुश्बू बे मिसाल है मगर अम्बरे सारा और भी बेहतरीन खुश्बू है, उस का नाम ही अम्बरे सारा है।

आ'ला ह़ज़रत का इश्क़े रसूल

अल्लाह, अल्लाह, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़बान इश्क़ की ज़बान और इन का क़लम इश्क़ का क़लम है और येह इन्ही का हिस्सा है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जो कलाम लिखा है वोह कलामुल इमाम इमामुल कलाम या'नी इमाम का कलाम, कलामों का इमाम है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ना'ते रसूल लिखने के लिये क्या मांग रहे हैं :

तूबा में जो सब से ऊंची नाज़ुक सीधी निकली शाख़
मांगूं ना'ते नबी लिखने को रूह़े कुदुस से ऐसी शाख़

शर्ह़े कलामे रज़ा : سُبْحٰنَ اللهِ ! तूबा जन्नत में एक ऐसा दरख़्त है जो बहुत बुलन्दो बाला है, उस की शाख़ें इतनी घनी हैं कि हर जन्नती के घर में उस की शाख़ें पहुंच रही हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं रूह़े कुदुस या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ करूं कि आप मुझे सब से ऊंचे जन्नती दरख़्त तूबा की सब से ऊंची, नाज़ुक और सीधी निकली हुई शाख़ अ़त़ा कर दीजिये ताकि मैं उस से प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त लिखूं।

पहले लकड़ी के क़लम (पेन) को सियाही में डुबो कर लिखा जाता था, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जिस पेन की तमन्ना की है वोह ऐसा पेन है कि जिसे न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना है। हम जन्नत की ने'मतों के बारे में सिर्फ़ सुन सकते हैं समझ नहीं सकते, जन्नत की ने'मतें ऐसी हैं कि जिन का ख़त़रा व ख़याल भी दिल पर नहीं गुज़रता। अभी तो हम जन्नत की ने'मतों के बारे में सुन सुन कर दिल को बहला रहे हैं लेकिन اِنْ شَآءَ اللهُ जब हम आक़ाए करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम से जन्नत में जाएंगे तो पता चलेगा कि जन्नत की ने'मतें कैसी होती हैं।

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

ख़ुश्बूदार हाथ शरीफ़

मुस्लिम शरीफ़ में है, ख़ादिमे नबी ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक बदन की ख़ुश्बू से बढ़ कर किसी अ़म्बर, कस्तूरी और किसी चीज़ की ख़ुश्बू को न पाया। (مسلم، ص978، حدیث:6053) ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के रुख़्सारों (Cheeks) पर हाथ फेरा (जैसे हम बच्चे के चेहरे पर हाथ फेरते हैं) तो वोह कहते हैं कि मैं ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों से ऐसी ठन्डक और ख़ुश्बू पाई कि गोया अभी अभी आप ने इ़त्र बेचने वाले के सन्दूक़ (Box) से अपना हाथ बाहर निकाला है। (مسلم، ص978، حدیث:6052)

वाह ऐ इ़त्रे ख़ुदासाज़ महक्ना तेरा ख़ूबरू मलते हैं कपड़ों में पसीना तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 23)

शर्ह़े कलामे ह़सन : ऐ इ़त्रे ख़ुदासाज़ या'नी **अल्लाह** पाक के बनाए हुए ऐ इ़त्र! तेरी महक और तेरी ख़ुश्बू की लपटें भी क्या ख़ूब हैं कि "ख़ूबरू" या'नी ह़सीन व ख़ूब सूरत लोगों को तेरा पसीना नसीब हो जाए तो वोह अपने कपड़ों पर इसे मलते हैं। नीज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसीना मुबारक ले कर अपने कपड़ों पर मलना साबित है।

ख़ुश्बूए मुस्तफ़ा की शान

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी बच्चे के सर पर अपना मुबारक हाथ फेरते तो वोह बच्चा ख़ुश्बू से पहचाना जाता कि इस पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना मुबारक हाथ फेरा है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से भी हाथ शरीफ़ मिलाते तो उस

शख़्स का हाथ सारा दिन ख़ुश्बू से महक्ता रहता।

(सीरते मुस्तफ़ा, स. 578, सीरते रसूले अ़रबी, स. 263)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जिन के मुबारक लुआ़ब शरीफ़ (थूक शरीफ़) में शिफ़ा हो, जिन के मुबारक वुजूद में ख़ुश्बू ही ख़ुश्बू हो बल्कि जिन के मुबारक पसीने को बतौ़रे इत्र इस्ति'माल किया जाता हो और लगाने वाला सब लोगों में महक उठता हो उन की मुबारक ज़ात की ख़ूबियां कौन बयान कर सकता है, सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबू बक्र शिबली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरह की मुबारक मिट्टी में ख़ास क़िस्म की ख़ुश्बू है जो मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार होती है। (مدارج النبوة، 1/24)

इत्रे जन्नत में भी ऐसी ख़ुश्बू नहीं जैसी ख़ुश्बू नबी के पसीने में है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आंख, कान व बीनिये मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(7 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक की ने'मतों में से **''ह़वासे ख़म्सा''** भी हैं, देखने, सुनने, चखने, सूंघने और छूने की क़ुव्वत को **''ह़वासे ख़म्सा''** कहते हैं, एक इन्सान में आंख, कान, ज़बान, नाक और हाथ की क़ुव्वत का मुकम्मल तौ़र पर दुरुस्त होना **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी ने'मतों में से है। **अल्लाह** करीम के प्यारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिस जिस अदा व ख़ूबी को देखें वोह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ख़ास इनायतों से ब दरजए अतम (या'नी मुकम्मल तौ़र) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मौजूद है, सच तो येह है कि रब्बे जुल जलाल के मह़बूबे बे मिसाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ''बाल बाल'' बा कमाल है।

अल ग़रज़ उन के हर मू पे बेह़द दुरूद उन की हर ख़ू व ख़स्लत पे लाखों सलाम

शर्हे कलामे रज़ा : "मू" बाल को कहते हैं। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक शान के मुख़्तलिफ़ गोशों को बयान करते करते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि अल ग़रज़ ! या'नी क़िस्सा मुख़्तसर येह कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर हर बाल पर बेह़द रह़मतें और दुरूद हों और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर हर आ़दते करीमा पर **अल्लाह** पाक के लाखों सलाम हों।

मुबारक कान की शान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! नूर वाले आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान मुबारक कामिल व मुकम्मल थे और इन मुबारक कानों की शान ऐसी थी जैसी काएनात में किसी को न मिली, न मिले। हज़ारों मील दूर आस्मानों की चरचराहट (जो एक ख़ास क़िस्म की आवाज़ है) सुन लिया करते थे। तीरमिज़ी शरीफ़ में है : रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक मैं वोह देखता हूं जो तुम नहीं देखते और मैं वोह सुनता हूं जो तुम नहीं सुनते। (ترمذی، 4/141، حدیث:2319)

ऐ करम की कान ऐ गोशे हुज़ूर सुन ले फ़रियादे ग़रीबां अल ग़ियास

शर्हे कलामे ह़सन : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप बड़े फ़ज़्लो करम वाले हैं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कान हम जैसे ग़रीबों के दुख दर्द की फ़रियाद सुन लें।

मुबारक नाक की शान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर त़रह़ से बे ऐ़ब थे, आप का हर उ़ज़्व शरीफ़ (Holy Part of Body) मुनासिब था जिस पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाक शरीफ़ दराज़, बारीक और बीच में क़दरे बुलन्द थी। जिस पर हर वक़्त नूर की बरसात रहती और हर त़रह़ से मुनासिब और ख़ूब सूरत थी। (مواہب لدنیہ، 2/16)

नीची आंखों की शर्मो हया पर दुरूद ऊंची बीनी की रिफ़्अत पे लाखों सलाम

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रें शर्मो हया की वज्ह से अक्सर नीची रहती थीं और जब ऊंचा देखते थे तो अर्शे मुअ़ल्ला, लौहे़ महफ़ूज़ को पढ़ लेते थे।

मुबारक आंख की शान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखें ऐसी दिलकश थीं कि देखने वाला क़ुरबान हो जाए, तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखें सुर्मगीं (या'नी बिग़ैर सुरमा लगाए सुरमा लगी हुई नज़र आतीं) और पलकें शरीफ़ घनी और लम्बी थीं।

(شمائل ترمذی، ص19، حدیث:6)

ह़ज़रते हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक अब्रू (Holy Eyebrows) साइज़ में बड़े थे और उन पर बाल शरीफ़ मुनासिब थे, न बहुत ज़ियादा न बिल्कुल कम और दूर से आपस में मिले हुए लगते थे। (الوفا لابن جوزی، 2/7)

मुबारक आंखों की त़ाक़त का भी क्या कहना ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात के वक़्त भी ऐसे देखते थे जैसे दिन की रोशनी में देखते थे। (دلائل النبوۃ، 6/75)

हूं कर दो तो गर्दूं की बिना गिर जाए अब्रू जो खिचे तैग़े क़ज़ा फिर जाए
ऐ साह़िबे क़ौसैन बस अब रद न करे सहमे हुओं से तीरे बला फिर जाए

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के हुस्नो जमाल और जलाले बा कमाल की क्या अ़ज़मतो शान है अगर "हूं" फ़रमा दें तो आस्मान की बुन्याद हिल जाए और अगर आप के मुबारक

अब्रू पर बल या'नी हलका सा निशान आ जाए तो फ़ैसले बदल जाएं। ऐ मे'राज की रात **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात फ़रमाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप बस अब करम फ़रमा दीजिये कि हम डरे हुओं, ख़ौफ़ज़दों और कमज़ोरों से बलाओं, आफ़तों और मुसीबतों का रुख़ फिर जाए।

गिर्दाबे बला में फंस के कोई त़यबा की त़रफ़ जब तकता है
सुल्त़ाने मदीना ख़ुद आ कर बिगड़ी को बनाया करते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आवाज़ व बाज़ूए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(8 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है आप ने बाग़ात में गुलाब के फूलों को खिलते देखा हो, आइये मैं आप को ऐसे गुलाब के बारे में बताता हूं कि काएनात के उस ह़सीन तरीन गुलाब से बाग़ नहीं बल्कि बाग़ात निकलते हैं और वोह हैं मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नर्मो नाज़ुक, दिलकशो दिलकुशा गुलाब की ताज़ा पत्तियों से भी नर्म व मुलायम "होंट मुबारक" (Holy Lips)।

वोह गुल हैं लबहाए नाज़ुक उन के हज़ारों झड़ते हैं फूल जिन से
गुलाब गुलशन में देखे बुलबुल येह देख गुलशन गुलाब में है

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के प्यारे प्यारे गुलाबी होंट मुबारक ऐसे नर्मो नाज़ुक हैं कि उन से एक नहीं सो नहीं हज़ार नहीं बल्कि हज़ारों फूल निकलते हैं, ऐ फूलों के दीवाने बुलबुल ! तुम ने कई बाग़ात में गुलाब के त़रह़ त़रह़ के फूल देखे होंगे, मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक होंट शरीफ़ देख, येह ऐसे गुलाब हैं कि इस गुलाब से पूरे पूरे बाग़ात निकलते हैं।

मुबारक होंट शरीफ़

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के होंट मुबारक (Holy Lips) सारी काएनात के लोगों के होंटों से ज़ियादा ख़ूब सूरत हैं। (مواہب اللدنیہ، 17/2) (नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को) जब क़ब्रे अन्वर में उतारा गया तो मुबारक होंट हिल रहे थे, बा'ज़ सह़ाबा ने कान लगा कर सुना, आहिस्ता आहिस्ता "उम्मती उम्मती" फ़रमाते थे।

(फ़तावा रज़विय्या, 30/717 ब तग़य्युर)

जिन्हें मरक़द में ता ह़श्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उन में सदक़ा अपनी रह़मत का

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह ! आप को अपनी रह़मत का सदक़ा ! जिन ख़ुश नसीबों को आप क़ब्रे अन्वर में उम्मती फ़रमाएंगे और जो जो लोग आप की मुराद होंगे, उन ईमान वालों में हमें भी शामिल फ़रमा लें।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कलाम में बहुत गहराई होती है, मैं इस शे'र में ईमान की सलामती की दुआ़ महसूस कर रहा हूं, यहां यक़ीनन उम्मत से मुराद वोह लोग हैं जिन्हों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वते इस्लाम को क़बूल किया और ईमान के साथ इस दुन्या से रुख़्सत हुए।

मुबारक ज़बान की शान

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक बहुत ही ज़ियादा प्यारी थी और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई ख़ुश आवाज़ और मीठी गुफ़्तगू करने वाला न था। (जवाहिरुल बिह़ार (मुतर्जम), 3/260)

सर ता ब क़दम है तने सुल्ताने ज़मन फूल लब फूल दहन फूल ज़क़न फूल बदन फूल

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा व मौला, ज़माने के शहन्शाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक से ले कर क़दम शरीफ़ तक सारा जिस्मे पाक अपनी

लत़ाफ़त (या'नी नरमी व नाज़ुकी) में फूल है, मुबारक होंट भी फूल, मुबारक मुंह भी फूल, ठोड़ी शरीफ़ (Holy Chin) भी फूल तो सारा नूरानी बदन भी फूल।

मुबारक दांतों की शान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुंह मुबारक (Holy Mouth) कुशादा था और दांत मुबारक आपस में बिल्कुल मिले हुए नहीं थे बल्कि उन में कुछ फ़ासिला था, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू फ़रमाते तो सामने वाले दांतों से नूर निकलता दिखाई देता, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दांतों का मसूढ़ों और जबड़ों के अन्दर जुड़ाव (या'नी फ़िक्स होना) इन्तिहाई ख़ूब सूरत और ह़सीन अन्दाज़ में था और तरतीब में कमाले हुस्न मह़सूस होता। (الوفا لابن جوزی، 2/9) ह़ज़रते इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने मश्हूर अ़रबी ना'तिया कलाम "क़सीदए बुर्दा शरीफ़" में फ़रमाते हैं :

كَاَنَّمَا اللُّؤْلُؤُ الْمَكْنُوْنُ فِيْ صَدَفٍ مِنْ مَّعْدِنَيْ مَنْطِقٍ مِّنْهُ وَمُبْتَسَمٍ

तरजमा : यूं मा'लूम होता है कि सीप में छुपा हुवा मोती, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू शरीफ़ और मुस्कुराने की दो, "कानों (या'नी ज़बाने मुबारक और होंटों) से हैं।" मत़लब येह है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू शरीफ़ और मुबारक दांत हुस्न और आबो ताब में चमक्दार मोतियों (Shiny Pearls) से कहीं बढ़ कर हैं। (कश्फ़े बुर्दा, स. 231)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

क़सीदए बुर्दा शरीफ़ की मक़्बूलिय्यत

ह़ज़रते जलालुद्दीन मह़ल्ली शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : बा'ज़ बुज़ुर्गों ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर, आ़शिक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه की

ख़्वाब में ज़ियारत की, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बड़े ख़ूब सूरत अन्दाज़ में क़सीदए बुर्दा शरीफ़ के इस शे'र और इस से पहले वाले शे'र से ना'ते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ रहे हैं। (شرح القاری علی البردۃ، ص300)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमारे प्यारे आक़ा, नूर वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाते तो आप की मुबारक आवाज़ सब को सुनाई देती, एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया : "اِجْلِسُوْا या'नी बैठ जाओ।" तो सहाबिये रसूल हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने (दूर) क़बीलए बनी तमीम के मक़ाम पर इस मुबारक आवाज़ को सुना और फ़ौरन वहीं बैठ गए। (जवाहिरुल बिहार (मुतर्जम), 3/261) येह थे फ़रमां बरदार सहाबा। फिर हम क्यूं न कहें :

हर सहाबिये नबी..... जन्नती जन्नती
सब सहाबियात भी...... जन्नती जन्नती
हज़रते सिद्दीक़ भी...... जन्नती जन्नती
और उमर फ़ारूक़ भी.... जन्नती जन्नती
उस्माने ग़नी............... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अली... जन्नती जन्नती
हैं हसन हुसैन भी..... जन्नती जन्नती
हैं मुआविया भी....... जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी........ जन्नती जन्नती

मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धों के दरमियान कुछ फ़ासिला था और मुबारक कन्धे (Holy Shoulders) फ़र्बा (या'नी गोश्त से भरे हुए) थे। (الوفا لابن جوزی، 12/2) मुबारक हाथ रेशम (Silk) से मुलायम और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डे और मज़बूत थे, नाज़ुक हथेलियां (Palms) गोश्त से भरी हुई थीं। (مدارج النبوۃ، 25/1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आ'ज़ाए मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(9 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

मुबारक क़द की शान

ऐ आ़शिक़ाने मीलादे मुस्त़फ़ा ! **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़द्दे मुबारक (Holy Hight) न तो बहुत बड़ा था और न ही बहुत छोटा था अलबत्ता जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अकेले चलते तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ दरमियाने क़द की निस्बत की जाती थी, या'नी जब आप चलते तो कहा जाता कि आप दरमियाने क़द के हैं, इस के बा वुजूद जब कोई लम्बे क़द वाला शख़्स आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चलता तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा येह था कि आप ही बड़े क़द वाले नज़र आते थे। बसा अवक़ात जब दो लम्बे क़द वाले शख़्स आप के दाएं बाएं होते तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मो'जिज़े के त़ौर पर क़द में उन से बड़े नज़र आते। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जब वोह दोनों जुदा हो जाते तो उन्हें लम्बे क़द वाला कहा जाता और शहन्शाहे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ दरमियाने क़द की निस्बत की जाती।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

तेरा क़द्दे मुबारक गुलबुने रह़मत की डाली है इसे बो कर तेरे रब ने बिना रह़मत की डाली है

शर्ह़े कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप का मुबारक क़द (Holy Hight) "रह़मत के सुर्ख़ गुलाब" की शाख़ है कि **अल्लाह** पाक ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदा फ़रमा कर सारे जहां के लिये रह़मत की बुन्याद (Base) रख दी है।

बाल मुबारक

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक बाल इन्तिहाई ह़सीन और बहुत ख़ूब

सूरत थे। न तो बिल्कुल सीधे और न बहुत ज़ियादा घुंगरियाले (Curly) थे। जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन में कंघी शरीफ़ फ़रमाते तो ऐसे मा'लूम होते जैसे रेत में लहरें होती हैं। रिवायत में है : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें (Blessed Locks of Hair) कभी आधे कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को झूम झूम कर चूमने लगतीं। (شمائل ترمذی، ص18، 34، 35، حدیث:4، 23، 24، 25، 26) बा'ज़ अवक़ात आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुबारक बालों के चार हिस्से कर देते और हर कान मुबारक दो हिस्सों के दरमियान से ज़ाहिर (या'नी निकला) रहता और बा'ज़ अवक़ात अपने मुबारक बालों को कानों पर कर लेते जिस से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गरदन शरीफ़ चमक्ती हुई ज़ाहिर होती। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर और दाढ़ी मुबारक में कुल 17 बाल सफ़ेद थे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) और नाराज़ी चेहरए पाक से मा'लूम हो जाती थी क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जिल्द मुबारक (Holy Skin) बहुत ज़ियादा साफ़ थी। पेशानी मुबारक (Wide Blessed Forehead) कुशादा और दाढ़ी मुबारक घनी थी। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी दाढ़ी मुबारक को बढ़ाते और मूंछों को पस्त (या'नी छोटा) रखते थे। (احیاء العلوم، 2/470)

बाल मुबारक की शाने अ़ज़मत निशान

आ़शिक़े रसूल, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बदने मुबारक से निस्बत रखने वाले मुख़्तलिफ़ तबर्रुकात का ज़िक्रे ख़ैर करने के बा'द कुछ इस त़रह़ फ़रमाते हैं : और इन में सब में बहुत ज़ियादा अ़ज़मत वाला हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रीश या'नी दाढ़ी मुबारक का मूए मुत़ह्हिर है (या'नी

पाक करने वाला) मुबारक बाल है, मुसल्मानों का ईमान गवाह है कि सातों आस्मान व ज़मीन हरगिज़ उस एक मूए मुबारक की अ़ज़मत को नहीं पहुंचते। (फ़तावा रज़विय्या, 21/415)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिन की मुबारक दाढ़ी के बाल की येह "अ़ज़मत" है तो उन की दाढ़ी शरीफ़ की क्या शान होगी और जिन की दाढ़ी मुबारक की येह शान है उन दाढ़ी वाले आक़ा की क्या शान होगी।

कालियां ज़ुल्फ़ां वाला दुखी दिलां दा सहारा क़सम ख़ुदा दी मेनूं सब नालों प्यारा
देंदे ने गवाही ज़र्रें ज़र्रें कोहे तूर दे वेख दे नसीबां वाले जल्वे हुज़ूर दे
आमिना दा चन ते हलीमा दा दुलारा क़सम ख़ुदा दी मेनूं सब नालों प्यारा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रंग मुबारक

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक रंग के ह़वाले से "शमाइले तिरमिज़ी" और "शिफ़ा शरीफ़" वग़ैरा में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक रंग सफ़ेद था जिस में सुर्ख़ी मिली हुई होती थी, बिल्कुल चूने या सफ़ेदी की त़रह़ रंग मुबारक न था बल्कि सफ़ेद चेह्रए मुबारक में हलकी हलकी सुर्ख़ी मिली हुई होती, और दुन्या में येह रंग पसन्दीदा माना जाता है बिल ख़ुसूस अहले अ़रब के नज़्दीक। और जन्नत में पसन्दीदा रंग सोने का है, उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्या में येह दोनों रंग अ़त़ा फ़रमाए हैं और सफ़ेद रंग में सुर्ख़ी मिली होने की वज्ह से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रंगत में चमक पैदा होती थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क़दमैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(10 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत क़दमों (Beautiful Feet) वाले थे। (مواہب لدنیہ، 2/63)

दिल करो ठन्डा मेरा वोह कफ़े पा चांद सा सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : कफ़ : तल्वा। **पा :** पाउं। **चांद सा :** चांद के जैसा। **ज़रा :** थोड़ी देर के लिये।

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पाउं मुबारक की उंग्लियों में से सबाबा (अंगूठे के साथ वाली उंगली मुबारक) दराज़ थी। (مدارج النبوۃ، 1/20) मुबारक पिंडलियां (Blessed Shins) क़दमों की त़रफ़ से (इन्तिहाई मुनासिब अन्दाज़ में) पतली थीं।

मुबारक पिंडलियों की शान

ह़ज़रते सुराक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़रीब से देखा जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए पाक हिजरत फ़रमा रहे थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊंटनी पर सुवार थे और मुबारक पाउं रिकाब (Stirrup) में थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक पिंडलियां (अपनी सफ़ेदी और चमक दमक में) यूं मा'लूम हो रही थीं जैसे खजूर का ख़ोशा अपने पर्दे से अभी अभी बाहर निकला हो। पाउं मुबारक की तरो ताज़गी का येह आ़लम था कि देखने वाले को मा'लूम होता था कि अभी इन से पानी बह कर अलग हुवा है और मुबारक एड़ियों (Blessed Ankles) पर गोश्त कम था। बा'ज़ बड़े बलीग़ अ़रबी शाइ़रों ने मुबारक क़दमों की शानो अ़ज़मत बयान करते हुए बारगाहे इलाही में इन

के वसीले से यूं दुआ की है :

ऐ रब्बे करीम ! उन मुबारक क़दमों का सदक़ा जिस से तू ने बड़े बुलन्द मक़ामात, क़ाब क़ौसैन तै करवाए, उन मुबारक क़दमों की इज़्ज़तो अ़ज़मत का वासिता ! जिस के तुफ़ैल तू ने मख़्लूक़ के कन्धे को रिसालत के लिये ज़ीना बनाया, बराहे करम ! मेरे क़दमों को पुल सिरात पर साबित क़दम रख और अ़ज़ाबे जहन्नम से बचाने वाला और सहीहो सालिम रखने वाला बना और इन दोनों को मेरे लिये ज़ख़ीरा बना और जिस को येह दोनों वसीले मिल गए तो वोह अ़ज़ाब और जहन्नम के ख़ौफ़ से महफ़ूज़ो मामून हो गया। (الوفا لابن جوزی، 2/15)

गोरे गोरे पाउं चमका दो ख़ुदा के वासिते नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शब तार है

शर्हे कलामे रज़ा : आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ कर रहे हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी क़ब्र की रात अंधेरी है, ख़ुदा के वासिते आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी क़ब्र में तशरीफ़ ले आइये क्यूं कि जैसे ही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी क़ब्र में तशरीफ़ लाएंगे तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे नूरानी क़दमों से मेरी क़ब्र नूर से जगमगा उठेगी, रोशन हो जाएगी।

मुबारक क़दमों की शान

हज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब चलते तो झुक कर चलते गोया कि ऊपर से उतर रहे हैं। (जिस त़रह़ फूलों वाली टहनी झुकती है) और क़दम मुबारक चुस्ती, त़ाक़त और सुर्अ़त (या'नी जल्दी) के साथ उठाते थे।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन पर हमेशा पूरा क़दम (मुबारक) रखते थे, मैं ने किसी

को रास्ते में रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा तेज़ चलते नहीं देखा गोया कि ज़मीन आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों के नीचे लपेटी जाती थी और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'मूल के मुत़ाबिक़ (Normal) बे तकल्लुफ़ चलते थे और जब सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ चलते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अपने आगे आगे चलाते और फ़रमाते मेरी पीछे की जगह को फ़िरिश्तों के लिये ख़ाली छोड़ दो। (مدارج النبوۃ، 1/23)

मुबारक ना'लैन की शान

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'लैने पाक (जूती शरीफ़) के दो तस्मे (Laces) थे जो दो तस्मों से बटे हुए थे। (ابن ماجہ، 4/166، حدیث:3614)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक जूता शरीफ़ में दो तस्मे होते थे हर तस्मा बटा हुवा, इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के ना'लैने पाक थे, उस ज़माने में चप्पल का रवाज आ़म था वोह भी तस्मे वाली। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जूती मुबारक के दोनों चमड़े के फ़ीते आप के अंगूठे और उंगली के दरमियान से हो कर पन्जे मुबारक के दाएं बाएं जुड़े हुए थे। नक़्शे पाक वाली चप्पल नबिय्ये करीम ने अक्सर पहनी है मगर येह चप्पल कभी कभी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/141, 144 ब तग़य्युर)

क्या इमामे की हो बयां अ़ज़मत तेरी ना'लैन ताजे सर आक़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(11 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

सब से बड़ी रह़मत

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ पूरे का पूरा महीना रह़मतों और बरकतों वाला महीना है क्यूं कि इस में **अल्लाह** करीम के आख़िरी रसूल, बीबी आमिना के फूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (Birth) हुई है। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में **अल्लाह** पाक का फ़ज़्लो रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए और यक़ीनन **अल्लाह** पाक की रह़मत उतरने का दिन ख़ुशी व मसर्रत का दिन है, **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾

(پ11، یونس:58)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ''तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।''

फ़ज़्लो रह़मते ख़ुदावन्दी पर ख़ुशी का हुक्म ख़ुद क़ुरआने करीम हमें बयान फ़रमा रहा है जैसा कि अभी आयत में बयान किया गया, तो क्या जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर भी कोई **अल्लाह** पाक की रह़मत है ? सब से बड़ी **अल्लाह** पाक की रह़मत आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही हैं, ﴿وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾﴾ (پ17، الانبیا:107)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ''और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।''

सह़ाबे रह़मते बारी है बारहवीं तारीख़ करम का चश्मए जारी है बारहवीं तारीख़

(ज़ौक़े ना'त, स. 121)

विलादते शरीफ़ के वक़्त की बरकात

आइये आप को विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले से

ईमान अफ़रोज़ रिवायात सुनाता हूं, मवाहिबुल्लदुन्यह में है : आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ख़ुसूसिय्यत (Speciality) येह भी है कि क़ुरआने करीम से क़ब्ल तशरीफ़ लाने वाली आस्मानी कुतुब में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या में तशरीफ़ लाने की ख़ुश ख़बरियां थीं। (مواہب لدنیہ، 2/272)

मुबारक हो ह़बीबे रब्बे अक्बर आने वाला है मुबारक अम्बिया का आज अफ़्सर आने वाला है
जो है सरदार, आ़लम के सभी सज्दा गुज़ारों का ख़ुदा का आज वोह सच्चा सनागर आने वाला है

वालिदे आ'ला ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तह़रीर कुछ आसान कर के पेश करने की कोशिश करता हूं : प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपनी अम्मीजान के पेट में तशरीफ़ लाए तो फ़िरिश्तों ने शैत़ानों को ज़न्जीरों में जकड़ा और इब्लीस (या'नी शैत़ान) का तख़्त दरिया में डाल दिया और चालीस दिन उस पर अ़ज़ाब किया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत (Holy Birth) के साथ एक अ़जीबो ग़रीब नूर ज़ाहिर हुवा कि उस की रोशनी में मक्के में रहने वालों ने मुल्के शाम के मकानात देखे। विलादत (Birth) के वक़्त सितारे ज़मीन की त़रफ़ इस क़दर झुके थे कि देखने वालों को गुमान होता था कि शायद हमारे सर पर गिर पड़ेंगे। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पैदा होते ही सज्दा फ़रमाया। जिस वक़्त आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदा हुए, उस वक़्त आप के दादाजान (Grand Father) ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللهُ عَنْه ख़ानए का'बा में थे देखा कि बैतुल्लाह ने मक़ामे इब्राहीम में सज्दा किया।

(अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 181 मुल्तक़त़न)

जब कि पैदा शहे इन्सो जां हो गया दूर का'बे से लौसे बुतां हो गया
हर सितारा शबे मौलिदे मुस्त़फ़ा शम्अ़ दां शम्अ़ दां शम्अ़ दां हो गया
त़ूत़िये अस्फ़हां, सुन कलामे रज़ा बे ज़बां बे ज़बां बे ज़बां हो गया

ऐसे प्यारे से महब्बत कीजिये

अगर आदमी एहसान की वज्ह से किसी से महब्बत रखे तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत रखना लाइक़ तर (या'नी ज़ियादा हक़) है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम को दोज़ख़ से बचाया और जन्नत की राह पर चलाया (या'नी कुफ़्र से बचा कर ईमान की दौलत अ़ता फ़रमाई) और जो हुस्नो जमाल के सबब महब्बत रखे तो भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से महब्बत रखनी चाहिये कि **अल्लाह** पाक ने तमाम जहान से ज़ियादा हुस्ने ज़ाहिरी और बातिनी (Apparent and Hidden Beauty) आप को अ़ता फ़रमाया। (अन्वारे जमाले मुस्तफ़ा, स. 187, 188)

ऐ आशिक़ाने मीलाद ! घर घर, गली गली, दुकान दुकान शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए अच्छी अच्छी निय्यतों क साथ जश्ने विलादत मनाइये और सारा साल इस की बरकतें हासिल कीजिये।

मीलाद शरीफ़ मनाने की बरकतें

हज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आप के मीलाद शरीफ़ में येह तासीर है कि जिस घर में पढ़ा जाता है, एक साल तक वहां ख़ैरो बरकत, सलामती व आ़फ़ियत और रिज़्क़ की वुस्अ़त और माल की कसरत रहती है, इसी वासिते मक्का व मदीना व मिस्र व शाम व यमन के लोग हमेशा मीलाद की महफ़िलें करते हैं और जब रबीउ़ल अव्वल (का मुबारक महीना) आता है ख़ुश होते हैं, अच्छे लिबास पहनते हैं और ज़ीनतो तजम्मुल (या'नी बनना, संवरना) ज़ाहिर करते हैं और कपड़ों में ख़ुश्बूएं लगाते हैं, ख़ैरात ज़ियादा करते हैं, विलादत शरीफ़ (के वाक़िआ़त व बयानात) सुनने का मुकम्मल एहतिमाम करते हैं और इसे बड़ी काम्याबी और बड़े सवाब का काम समझते हैं।

(अन्वारे जमाले मुस्तफ़ा, स. 209 ब तग़य्युर)

रबीउ़ल अव्वल में पीर शरीफ़ के दिन विलादत क्यूं हुई ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (मह़बूबे रब्बे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत किसी) बा बरकत दिन मसलन जुमुआ़ और बा बरकत महीने मुह़र्रम या रमज़ान में न हुई ताकि कोई येह ख़याल न करे कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़माने और वक़्त से शरफ़ मिला (या'नी बुज़ुर्गी ह़ासिल हुई) बल्कि ह़क़ येह है कि ख़ुद वक़्त और ज़माने ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ज़ीलत पाई है।

(जवाहिरुल बिह़ार (मुतर्जम), 3/242)

मह़बूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं आज अम्बिया के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं
क्यूं है फ़ज़ा मुअ़त्त़र ! क्यूं रोशनी है घर घर अच्छा ! ह़बीबे दावर तशरीफ़ ला रहे हैं
अ़त्त़ार अब ख़ुशी से फूला नहीं समाता दुन्या में उस के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़साइसे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(14 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! गुज़श्ता या'नी गुज़रे हुए अम्बियाए किराम में से किसी नबी को एक और किसी को ज़ियादा मो'जिज़ात अ़त़ा किये गए और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा मो'जिज़े अ़त़ा हुए। किसी नबी के हाथ में मो'जिज़ा था, किसी की सांस में और किसी की आंख में। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/162) मगर हमारे आक़ा, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान येह है कि :

दिये मो'जिज़े अम्बिया को ख़ुदा ने हमारा नबी मो'जिज़ा बन के आया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बारगाहे रिसालत में ह़ज़रते जिब्राईल की ह़ाज़िरी

''इर्शादुस्सारी शर्ह़े सह़ीहुल बुख़ारी'' में है : ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास 12 मरतबा, ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के पास 4 मरतबा, ह़ज़रते नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास 50 मरतबा, ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास 42 मरतबा, ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास 400 मरतबा, ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास 10 मरतबा ह़ाज़िर हुए जब कि **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (जो कि ह़बीबुल्लाह हैं) की बारगाहे आ़ली में 24000 (चौबीस हज़ार) मरतबा ह़ाज़िर हुए। (اِرشاد الساری، 1/101، تحت الحدیث:2)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद महदी फ़ासी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास 4 मरतबा, ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास 3 मरतबा और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास 4 मरतबा आए। (مطالع المسرات، ص427 ملتقطا)

बे लिक़ाए यार उन को चैन आ जाता अगर बार बार आते न यूं जिब्रील सिदरा छोड़ कर

शर्ह़े कलामे ह़सन : अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात के बिग़ैर ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को चैन नहीं आता था, इसी वज्ह से आप बार बार बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए।

सारी काएनात के लिये नबी

दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام मख़्सूस क़ौम की त़रफ़ भेजे गए जब कि **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ इन्सान व जिन्न, बल्कि मलाएका (या'नी फ़िरिश्तों), ह़ैवानात और जमादात सब की त़रफ़ नबी बना कर भेजे गए। जैसा कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : وَاُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً या'नी मैं सारी मख़्लूक़ की त़रफ़ नबी बना कर भेजा गया हूं। (مسلم، ص210،211، حدیث:1167)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "तक्मीलुल ईमान" में फ़रमाते हैं : मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम जिन्नों और इन्सानों की त़रफ़ नबी बना कर भेजे गए इसी लिये आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूलुस्सक़लैन (या'नी इन्सानों और जिन्नात के नबी) कहते हैं।

(تکمیل الایمان، ص127)

सब से पहले नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

ऐ जश्ने विलादत मनाने वाले आ़शिक़ाने मीलाद ! हम सब के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़ुसूसिय्यात (Specialties) में से येह भी है कि सब से आख़िरी होने के साथ साथ सब से पहले नबी भी आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही हैं। क्यूं कि सब से पहले मर्तबए नुबुव्वत आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही को अ़त़ा हुवा। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) : كُنْتُ نَبِيًّا وَّآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ या'नी मैं उस वक़्त भी नबी था जब कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام रूह़ व जिस्म के दरमियान थे।

(جامع صغیر للسیوطی، ص400، حدیث:6424)

फ़िरिश्तों का झुका सर सूए आदम किस के बाइ़स से तेरा ही नूर था ऐ रहने वाले सब्ज़ गुम्बद के

बरकत का नुज़ूल

हम गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ख़ुसूसिय्यत (Speciality) येह भी है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब (अपनी प्यारी प्यारी) अम्मीजान के पेट शरीफ़ में तशरीफ़ लाए तो ऐसी बारिश हुई कि नहरें जारी हो गईं और दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब हो गए और क़बीलए क़ुरैश पर हर त़रफ़ से बरकत नाज़िल हुई (ह़ालां कि इस से क़ब्ल ग़िज़ा की सख़्त कमी थी) चुनान्चे उस साल का नाम "سَنَةُ الْفَتْحِ وَالْاِبْتِهَاجِ" या'नी कुशादगी व ख़ुशह़ाली का साल रखा गया। (अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 172)

शाहे कौनैन जल्वा नुमा हो गया रंग आ़लम का बिल्कुल नया हो गया
मुन्तख़ब आप की ज़ाते वाला हुई नामे पाक आप का मुस्त़फ़ा हो गया
दुश्मनो दोस्त मुफ़्लिस ग़रीबो अमीर तेरे सदक़े में सब का भला हो गया

(क़बालए बख़्शिश, स. 68, 73)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ज़बाने पाके मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(28 रबीउ़ल अव्वल 1442 को होने वाला बयान)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने शायद येह मुह़ावरा सुना होगा : ''**समुन्दर को कूज़े में बन्द करना**'' इस का मत़लब येह है कि बड़ी बात को मुख़्तसर अल्फ़ाज़ के साथ बयान कर देना। अ़रबी का एक मुह़ावरा है : خَيْرُ الْكَلَامِ مَاقَلَّ وَدَلَّ या'नी बेहतरीन बात वोह है जो क़लील या'नी मुख़्तसर और पुर दलील हो। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने तमाम तर फ़ज़ाइलो कमालात के साथ अपनी पाक ज़ात में मुन्फ़रिद व बे मिसाल हैं। आप जैसा कोई नहीं है, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बढ़ कर फ़सीह़ो बलीग़ होने के साथ साथ ''जवामिउ़ल कलिम'' (या'नी मुख़्तसर से जुम्ले में ज़ियादा मआ़नी को बयान) करने के मो'जिज़े से नवाज़े गए ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद सावी मालिकी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम ज़बानें सिखा दी थीं।

(حاشیۃ الصاوی، پ13، ابراہیم، تحت الآیۃ:4، 3/1014)

''मिरआतुल मनाजीह़'' में है : ''हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुदरती त़ौर पर तमाम ज़बानें जानते हैं। जब हुज़ूर जानवरों, पथ्थरों, कंकरों की बोलियां समझते हैं तो इन्सानों की बोली क्यूं न समझेंगे !'' (मिरआतुल मनाजीह़, 6/335) एक और मक़ाम पर है : ''हमारे हुज़ूर ज़िन्दगी शरीफ़ में

तमाम ज़बानें जानते हैं, ह़त्ता कि लकड़ी व पथ्थर की ज़बानें । जानवर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रियादें करते थे और अब भी हर ज़बान से वाक़िफ़ हैं । हुज़ूर के रौज़े पर हर फ़रियादी अपनी ज़बान में अ़र्ज़ी मा'रूज़ करता है, वहां तरजुमान की ज़रूरत नहीं पड़ती ।'' (मिरआतुल मनाजीह़, 1/135)

वोही भरते हैं झोलियां सब की, वोह समझते हैं बोलियां सब की,
आओ बाज़ारे मुस्त़फ़ा को चलें, खोटे सिक्के वहीं पे चलते हैं

प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से ह़ाज़िर होने वाले लोगों से उन्हीं की ज़बान में बिला तकल्लुफ़ गुफ़्तगू फ़रमाते । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गुफ़्तगू सब से ज़ियादा शीरीं या'नी मीठी और अदाएगी में सब से ज़ियादा जल्द अदा होने वाली थी, मुबारक गुफ़्तगू निहायत लज़ीज़ व दिल नशीन थी कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू शरीफ़ दिलों पर बहुत ज़ियादा असर अन्दाज़ होती और दिलों को मोह लेती या'नी अपनी गिरिफ़्त में ले लेती । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब बयान फ़रमाते तो सब से ज़ियादा ख़ैर ख़्वाही करने वाले होते । ना मुनासिब बात हरगिज़ न फ़रमाते ।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं सारे अ़रब में घूमा फिरा हूं और मैं ने बड़े बड़े फ़ुसह़ाए अ़रब (या'नी बहुत अच्छे अन्दाज़ से अ़रबी बोलने वालों) को भी सुना है लेकिन आप से ज़ियादा फ़सीह़ किसी को नहीं सुना । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे मेरे रब ने अदब सिखाया है । (مواہب لدنیہ، 2/20)

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूं तो किस को ज़बां नहीं
वोह सुख़न है जिस में सुख़न न हो वोह बयां है जिस का बयां नहीं
तेरे आगे यूं हैं दबे लचे फ़ुसह़ा अ़रब के बड़े बड़े
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 107, 108)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की प्यारी प्यारी गुफ़्तगू शरीफ़ पर क़ुरबान जाऊं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसी मीठी और दिल नशीन गुफ़्तगू करने वाली ज़बान किसी को भी नहीं मिली, आप की मुबारक गुफ़्तगू में कोई ए'तिराज़ नहीं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान तो ऐसा है कि उस का बयान ही नहीं हो सकता। ऐ मेरे आक़ा व मौला ! आप के सामने अ़रब के बड़े बड़े फ़सीह़ो बलीग़ ज़बान में अ़रबी बोलने वाले ऐसे हैं, जैसे गूंगे हों और इन के मुंह में ज़बान ही न हो बल्कि नहीं नहीं मुंह में ज़बान तो क्या आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने आने के लिये उन के जिस्मों में जान ही नहीं है।

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप हम सब से ज़ियादा फ़सीह़ हैं जब कि आप कहीं तशरीफ़ भी नहीं ले गए फिर इस में क्या राज़ है ? तो शह्द से मीठा बोलने वाले प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : (ह़ज़रते) इस्माईल (عَلَيْهِ السَّلَام) की लुग़त (या'नी ज़बान) मिट चुकी थी, (ह़ज़रते) जिब्रईल उसे मेरे पास लाए, मैं ने इसे याद कर लिया। (الوفاء لابن جوزی، ص54)

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे "जवामिउ़ल कलिम" के साथ भेजा गया है। (بخاری، 2/303، حدیث:2977)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आइये मैं आप को "जवामिउ़ल कलिम" (या'नी मुख़्तसर से जुम्ले में ज़ियादा मआ़नी को बयान करने) के अनमोल ख़ज़ाने से एक फ़रमाने आ़लीशान सुनाता हूं, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है : (कामिल) मुसल्मान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान महफ़ूज़ रहें और मुहाजिर (या'नी हिजरत करने वाला) वोह है जो **अल्लाह** पाक की मन्अ़ की गई चीज़ों को छोड़ दे।

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह ह़दीस भी उन जवामिउ़ल कलिम में से है जिन्हें मुह़द्दिसीन ने उम्मुल अह़ादीस में शुमार किया है। ग़ौर कीजिये ! चन्द अल्फ़ाज़ हैं मगर इन में मआ़नी के समुन्दर मोज्ज़न हैं। पहला हिस्सा बन्दों की तमाम ह़क़ तलफ़ियों से बचने और तमाम हुक़ूक़ की अदाएगी की त़रफ़ रहनुमाई करता है और दूसरा हिस्सा हुक़ूक़ुल्लाह की बजा आवरी में हर क़िस्म की कोताही पर क़दग़न (या'नी रोक) लगा रहा है, अब ज़रा सा ग़ौर करने पर इस की शर्ह़ में हर ज़ी इ़ल्म दफ़्तर पर दफ़्तर तय्यार कर सकता है। अगर मुसल्मान इन दोनों हिस्सों पर अ़मल पैरा हो जाएं तो हमारा समाज (या'नी मुआ़शरा) अम्न का गहवारा बन जाए, और इन्सान का भी ज़ाहिरो बात़िन कुन्दन (या'नी सोने की त़रह़ चमक्ने वाला) हो जाए। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/309)

उस की प्यारी फ़साह़त पे बेह़द दुरूद उस की दिलकश बलाग़त पे लाखों सलाम
उस की बातों की लज़्ज़त पे लाखों दुरूद उस के ख़ुत़्बे की हैबत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जश्ने विलादत के ना रे

सरकार की आमद..... मरह़बा	शहे अबरार की आमद.... मरह़बा	नज़ीर की आमद..... मरह़बा
सरदार की आमद.....मरह़बा	मम्बए अन्वार की आमद.. मरह़बा	मुनीर की आमद..... मरह़बा
सालार की आमद..... मरह़बा	ह़ुज़ूर की आमद..... मरह़बा	बसीर की आमद..... मरह़बा
मुख़्तार की आमद..... मरह़बा	रसूल की आमद..... मरह़बा	शहीर की आमद..... मरह़बा
ग़म ख़्वार की आमद.... मरह़बा	अच्छे की आमद..... मरह़बा	ख़बीर की आमद..... मरह़बा
ताजदार की आमद..... मरह़बा	सच्चे की आमद..... मरह़बा	ज़हीर की आमद..... मरह़बा
शहर यार की आमद.... मरह़बा	बशीर की आमद..... मरह़बा	रऊफ़ की आमद..... मरह़बा

ख़ुश्बूए रसूल

हज़रते बीबी उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं : जिस रोज़ प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमाया (या'नी इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा), मैं ने अपना हाथ आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के मुबारक सीने पर रखा, फिर कई हफ़्ते गुज़र गए मैं हस्बे मा'मूल खाना खाती और वुज़ू करती रही लेकिन मेरे हाथ से मुश्क की ख़ुश्बू न गई। (دلائل النبوۃ للبیہقی، 7/219)

978-969-722-128-8
01082225

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net